विशद
पुण्यास्त्रव विधान
(माण्डला)

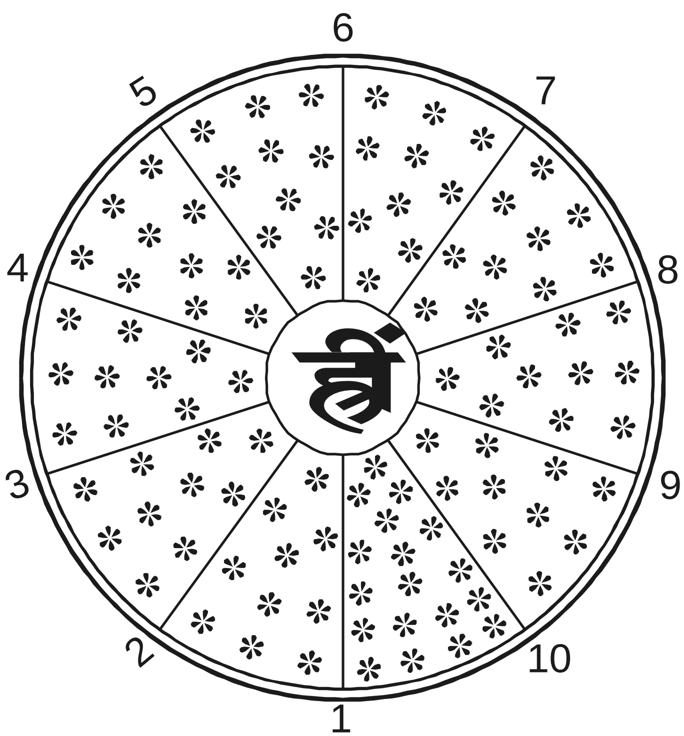

कुल अर्घ्य-108

aM{`Vm - प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति - **विशद पुण्यास्त्रव विधान**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति, पंचकल्याणक प्रभावक
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम-2014 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी आस्था दीदी, सपना दीदी

संयोजन - ब्र. किरण दीदी, आरती दीदी, उमा दीदी ● मो. 9829127533

प्राप्ति स्थल -
1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, नेहरू बाजार
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन (ठेकेदार)
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 09414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा ● मो.: 09416882301)

4. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली

5. जय अरिहन्त ट्रेडर्स (हरीश जैन)
6561, नेहरू गली, गाँधी नगर, दिल्ली, मो. 9818115971

मूल्य - 21/- रु. मात्र

-: अर्थ सौजन्य : -

ईश्वर-सन्तोष
इंजि. विपुल - इंजि. प्रियंका, गुंजन (सी.ए.)
सोनी परिवार (राजमहल वाले)
4-J-14, महावीर नगर III, कोटा-5 (राज.)
0744-2478892, 9352802892 kuntij@rediffmail.com

पुण्यास्त्रव व्रत विधि

संसार में प्रत्येक अच्छे या बुरे कार्यों को करने में सर्वप्रथम संरंभ, समारंभ और आरंभ क्रियायें होती हैं। मन, वचन और काय से प्रवृत्ति होती है जो कि कृत, कारित और अनुमोदना रूप से ही होती है। प्रत्येक के साथ क्रोध, मान, माया और लोभ ये कषायें अवश्य ही रहती हैं। इसलिये प्रथम ही संरंभ आदि तीन को मन आदि तीन से गुणा करके 3x3=9 भेद हुये, पुनः इन नव को कृत आदि से गुणा किये तो 9x3=27 भेद हुए, अनंतर चार कषाय से गुणा करने से 27x4=108 भेद हो जाते हैं। इन्हीं पापास्रवों को रोकने एवं पुण्यास्रव को बढ़ाने हेतु माला में 108 दाने होते हैं। इन 108 व्रतों को करने से महान् सातिशय पुण्य कर्मों का आस्रव होता है पुनः परंपरा से सम्पूर्ण आस्रव का अभाव होकर मोक्ष की प्राप्ति होती है। लौकिक फल तो संसार के चक्रवर्ती आदि के वैभव,इन्द्र पद आदि तो सहज ही संभव हैं। अतः यह व्रत अवश्य ही करना चाहिए।

व्रत के दिन श्री जिनेन्द्र देव का अभिषेक कर चौबीसी पूजा और पुण्यास्त्रव पूजा अवश्य करनी चाहिए। व्रत के उद्यापन पर **परम पूज्य आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज** द्वारा रचित यह पुण्यास्त्रव विधान कर यथायोग्य चारों प्रकार का दान करना चाहिए।

संरंभ– हिंसादि करने का मन में विचार करना।

समारंभ– हिंसादि कर्मों के करने का अभ्यास करना।

आरंभ– हिंसादि कार्यों को प्रारंभ कर देना।

कृत– स्वयं करना।

कारित– दूसरों से कराना।

अनुमोदना या अनुमति– दूसरों के द्वारा हिंसादि क्रियाओं के करने

को अच्छा कहना–समर्थन करना। आगे मन, वचन, काय और क्रोध, मान, माया और लोभ के अर्थ स्पष्ट हैं।

इसका समुच्चय मंत्र निम्न प्रकार है–

जाप्य–ॐ ह्रीं कर्मास्रवरहितानन्तकेवलिभ्यो नमः।

यह व्रत इच्छानुसार अष्टमी–चतुर्दशी आदि किन्हीं भी तिथि को किया जा सकता है। इसमें 108 व्रत करने होते हैं। उत्तम विधि, उपवास, मध्यम एक बार अल्पाहार और जघन्य में एक बार शुद्ध भोजन करना चाहिये।

प्रत्येक व्रत के पृथक्–पृथक् मंत्र–

1. ॐ ह्रीं क्रोधकृतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
2. ॐ ह्रीं क्रोधकारितमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
3. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
4. ॐ ह्रीं क्रोधकृतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
5. ॐ ह्रीं क्रोधकारितमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
6. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
7. ॐ ह्रीं क्रोधाकृतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
8. ॐ ह्रीं क्रोधाकृतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
9. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
10. ॐ ह्रीं मानकृतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
11. ॐ ह्रीं मानकारितमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
12. ॐ ह्रीं मानानुमतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
13. ॐ ह्रीं मानकृतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
14. ॐ ह्रीं मानकारितमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
15. ॐ ह्रीं मानानुमतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।

16. ॐ ह्रीं मानकृतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
17. ॐ ह्रीं मानकारितमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
18. ॐ ह्रीं मानानुमतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
19. ॐ ह्रीं मायाकृतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
20. ॐ ह्रीं मायाकारितमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
21. ॐ ह्रीं मायानुमतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
22. ॐ ह्रीं मायाकृतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
23. ॐ ह्रीं मायाकारितमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
24. ॐ ह्रीं मायानुमतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
25. ॐ ह्रीं मायाकृतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
26. ॐ ह्रीं मायाकारितमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
27. ॐ ह्रीं मायानुमतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
28. ॐ ह्रीं लोभकृतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
29. ॐ ह्रीं लोभकारितमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
30. ॐ ह्रीं लोभनुमतमनःसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
31. ॐ ह्रीं लोभकृतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
32. ॐ ह्रीं लोभकारितमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
33. ॐ ह्रीं लोभानुमतमनःसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
34. ॐ ह्रीं लोभकृतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
35. ॐ ह्रीं लोभकारितमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
36. ॐ ह्रीं लोभानुमतमनःआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
37. ॐ ह्रीं क्रोधकृतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
38. ॐ ह्रीं क्रोधकारितवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
39. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
40. ॐ ह्रीं क्रोधकृतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।

41. ॐ ह्रीं क्रोधकारितवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
42. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
43. ॐ ह्रीं क्रोधकृतवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
44. ॐ ह्रीं क्रोधकारितवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
45. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
46. ॐ ह्रीं मानकृतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
47. ॐ ह्रीं मानकारितवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
48. ॐ ह्रीं मानानुमतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
49. ॐ ह्रीं मानकृतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
50. ॐ ह्रीं मानकारितवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
51. ॐ ह्रीं मानानुमतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
52. ॐ ह्रीं मानकृतवचनआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
53. ॐ ह्रीं मानकारितवचनआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
54. ॐ ह्रीं मानानुमतवचनआरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
55. ॐ ह्रीं मायाकृतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
56. ॐ ह्रीं मायाकारितवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
57. ॐ ह्रीं मायानुमतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
58. ॐ ह्रीं मायाकृतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
59. ॐ ह्रीं मायाकारितवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
60. ॐ ह्रीं मायानुमतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
61. ॐ ह्रीं मायाकृतवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
62. ॐ ह्रीं मायाकारितवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
63. ॐ ह्रीं मायानुमतवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
64. ॐ ह्रीं लोभकृतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
65. ॐ ह्रीं लोभकारितवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।

66. ॐ ह्रीं लोभानुमतवचनसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
67. ॐ ह्रीं लोभकृतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
68. ॐ ह्रीं लोभकारितवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
69. ॐ ह्रीं लोभानुमतवचनसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
70. ॐ ह्रीं लोभकृतवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
71. ॐ ह्रीं लोभकारितवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
72. ॐ ह्रीं लोभानुमतवचनारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
73. ॐ ह्रीं क्रोधकृतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
74. ॐ ह्रीं क्रोधकारितकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
75. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
76. ॐ ह्रीं क्रोधकृतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
77. ॐ ह्रीं क्रोधकारितकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
78. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
79. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
80. ॐ ह्रीं क्रोधकारितकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
81. ॐ ह्रीं क्रोधानुमतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
82. ॐ ह्रीं मानकृतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
83. ॐ ह्रीं मानकारितकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
84. ॐ ह्रीं मानानुमतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
85. ॐ ह्रीं मानकृतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
86. ॐ ह्रीं मानकारितकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
87. ॐ ह्रीं मानानुमतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
88. ॐ ह्रीं मानकृतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
89. ॐ ह्रीं मानकारितकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
90. ॐ ह्रीं मानानुमतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।

91. ॐ ह्रीं मायाकृतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
92. ॐ ह्रीं मायाकारितकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
93. ॐ ह्रीं मायानुमतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
94. ॐ ह्रीं मायाकृतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
95. ॐ ह्रीं मायाकारितकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
96. ॐ ह्रीं मायानुमतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
97. ॐ ह्रीं मायाकृतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
98. ॐ ह्रीं मायाकारितकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
99. ॐ ह्रीं मायानुमतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
100. ॐ ह्रीं लोभकृतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
101. ॐ ह्रीं लोभकारितकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
102. ॐ ह्रीं लोभानुमतकायसंरंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
103. ॐ ह्रीं लोभकृतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
104. ॐ ह्रीं लोभकारितकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
105. ॐ ह्रीं लोभानुमतकायसमारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
106. ॐ ह्रीं लोभाकृतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
107. ॐ ह्रीं लोभकारितकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।
108. ॐ ह्रीं लोभानुमतकायारंभमुक्ताय अर्हत्परमेष्ठिने नमः।

परम पूज्य आचार्य गुरुवर श्री विशदसागरजी महाराज अब तक के सर्वाधिक 108 नए विधानों की रचना कर चुके हैं। सभी पूजा विधान इसी तरह सरल भाषा में रचे गये हैं। व्रत के दिनों में यथायोग्य पूजा, जाप्य एवं विधान कर जीवन को सौभाग्यशाली बनाएँ।

संकलन : मुनि विशालसागर (संघस्थ)
जैन मंदिर, सेक्टर–3, रोहिणी–दिल्ली

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव–शास्त्र–गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदिक, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नी, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरी का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मों कृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव 'विशद', जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा- पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाए गर्भ कल्याण।
अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।

प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता श्रेष्ठ प्रकाश।।5।।
वस्तू तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तू पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति अरु धर्मादिक का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याए भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा- नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ ! हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ती पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पुण्यास्रव मण्डल विधान पूजा

(स्थापना)

जीव करें सम्रम्भ समारम्भ, आरम्भकृत कारित मोदन।
मन-वच-तन से चार कषायों, द्वारा होय कर्म बन्धन।।
एक सौ आठ प्रकार कर्म से, बचने करते जिन अर्चन।
विशद भाव से श्री जिनेन्द्र का, करते हैं हम आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वर ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वर ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वर ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द राधेश्याम)

जल पीकर भी मन उलझा है, मेरा तृष्णा के शोलों में।
सच्चा सुख पाया नहीं कभी, धारणकर तन के चोलों में।।
हम पुण्याश्रव को अपनाकर, शिवपथ के राही बन जाएँ।
सिद्धों में मिलकर के स्वामी, हम सुख अनन्त को प्रगटाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गरमी है अग्नी से ज्यादा, मेरे तन-मन की चाहों में।
शीतलता पाने को भटके, इस सारे जग की राहों में।।
हम पुण्याश्रव को अपनाकर, शिवपथ के राही बन जाएँ।
सिद्धों में मिलकर के स्वामी, हम सुख अनन्त को प्रगटाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अब हमें समझना निज स्वरूप, कर्मों का झूठा नाता है।
कर्मारी को जो जीत सके, वह ही अक्षय पद पाता है।।
हम पुण्याश्रव को अपनाकर, शिवपथ के राही बन जाएँ।
सिद्धों में मिलकर के स्वामी, हम सुख अनन्त को प्रगटाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मन की मादकता के कारण, प्राणी जग के मतवाले हैं।
निज का स्वरूप जो जान गये, खुल गये हृदय के ताले हैं।।
हम पुण्याश्रव को अपनाकर, शिवपथ के राही बन जाएँ।
सिद्धों में मिलकर के स्वामी, हम सुख अनन्त को प्रगटाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ क्षुधा बहुत बलशाली है, हम शांत नहीं कर पाते हैं।
जो ज्ञान सरस को चख लेते, जग भोग उन्हें ना भाते हैं।।
हम पुण्याश्रव को अपनाकर, शिवपथ के राही बन जाएँ।
सिद्धों में मिलकर के स्वामी, हम सुख अनन्त को प्रगटाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब मोह तिमिर छा जाए तो, निज का स्वरूप खो जाता है।
चेतन का द्वीप जले उर में, ईश्वर वह तब हो जाता है।।
हम पुण्याश्रव को अपनाकर, शिवपथ के राही बन जाएँ।
सिद्धों में मिलकर के स्वामी, हम सुख अनन्त को प्रगटाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का फल मिलता सबको, बेकार जीव यह रोता है।
निज के स्वभाव में रमण करे, वह सिद्ध स्वयं ही होता है।।
हम पुण्याश्रव को अपनाकर, शिवपथ के राही बन जाएँ।
सिद्धों में मिलकर के स्वामी, हम सुख अनन्त को प्रगटाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हमको प्रभु अच्छा फल देना, यह कहते नाथ लजाते हैं।
जो निज स्वभाव में रमण करें, वे निश्चय शिवफल पाते हैं।।
हम पुण्याश्रव को अपनाकर, शिवपथ के राही बन जाएँ।
सिद्धों में मिलकर के स्वामी, हम सुख अनन्त को प्रगटाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भटक चुके चारों गति में, भव भ्रमण और नहिं करना है।
तव गुण गाते हे नाथ ! हमें, अभ भव सागर से तरना है।।
हम पुण्याश्रव को अपनाकर, शिवपथ के राही बन जाएँ।
सिद्धों में मिलकर के स्वामी, हम सुख अनन्त को प्रगटाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छंद– यह नीर भरा के लाए, त्रय धारा देने आए।
अन्तर में शांती पाएँ, ना भव सागर भटकाए।।

शान्तये शांतिधारा...

चाल छंद– यह पुष्प लिए शुभकारी, जो है अति खुशबूकारी।
हम पुष्पाञ्जलि को लाए, पुण्यास्रव पाने आए।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

सोरठा– पाप हमारे मार्ग में, बन बैठे हैं काल।
पुण्याश्रव करने अतः, गाते हैं जयमाल।।

(चौबोला छंद)

कर्म घातियाँ नाश करें जिन, केवल ज्ञान जगाते हैं।
अष्ट कर्म के नाशक जिनवर, सिद्ध परम पद पाते हैं।।
साता कर्मोदय होने पर, ईर्यापथ आश्रव हो जान।
साम्परायिक आश्रव के कारण, भ्रमण करें ये जीव जहान।।1।।
अष्ट कर्म का बन्ध जीव को, तीव्र मन्द या ज्ञाताज्ञात।
हो अज्ञात भाव के द्वारा, निज शक्ती से कर्मोत्पात।।
मिथ्याविरति पाँच–पाँच, पन्द्रह प्रमाद त्रय योग कषाय।
इनके द्वारा आश्रव होता, बन्ध जीव इनसे ही पाय।।2।।
मोहकर्म गाया दुखदायी, जिसके हैं दो भेद प्रधान।
दर्शन अरु चारित्र मोहनीय, दर्शन घाते सद् श्रद्धान।।

कर्मोदय चारित्र मोह से, संयम ना पावे इन्सान।
मुक्ती का कारण रत्नत्रय, पाना दुर्लभ रहा महान।।3।।
मोह कर्म बलवान जहाँ में, जिसके भेद असंख्य प्रमाण।
स्थिति अरु अनुभाग जीव के, बन्ध कराए मोह महान।।
सर्वास्त्रवों के द्वारा प्राणी, पाप कमाए बारम्बार।
अतः पाप के कारण गाए, आगम में शत् आठ प्रकार।।4।।
जो सम्रम्भ समारम्भ आरम्भ, मन वच तन तीनों से जान।
कृतकारित अनुमोदन द्वारा, चार कषायों द्वारा मान।।
एक सौ आठ प्रकार पाप से, बचने करते हैं सब जाप।
एक सौ आठ मणी की माला, फेरे से मिटता संताप।।5।।
श्री जिन का गुणगान किए या, उच्चारण करने से नाम।
पापों का आस्रव रुक जाए, पुण्याश्रव से हो सुखधाम।।
पञ्च महाव्रत समिति गुप्ति तिय, पालन करके दश विध धर्म।
द्वादश अनुप्रेक्षा परिषहजय, कर आस्त्रव रोकें षट् कर्म।।6।।
ऐसे अविकारी जिन मुनिवर, पालन करते पञ्चाचार।
निज आतम का ध्यान लगाकर, दोष करें सारे परिहार।।
जिन भक्ती पूजा के द्वारा, होता पुण्य का सम्पादन।
शिवपथ के राही बनते वह, करते जिन पद जो अर्चन।।7।।
चक्रवर्ति बलदेव तीर्थंकर, आदिक पद पा महति महान।
दीक्षा धारण करने वाले, प्राप्त करें फिर पद निर्वाण।।
पुण्योदय आये ऐसा प्रभु, प्राप्त करें सम्यक् श्रद्धान।
सम्यक् ज्ञानाचरण प्राप्त कर, रत्नत्रय निधि पाएँ प्रधान।।8।।
कर्म निर्जरा कर इस भव से, पाएँ ऐसी शक्ति महान।
उत्तम संहनन पाकर मुनि बन, प्राप्त होय हमको निर्वाण।।
पुण्योदय ऐसा ना आया, मिली प्रभू ना चरण शरण।
'विशद' भावना यह हम भाते, बनो नाथ भव सिन्धु तरण।।9।।

दोहा– नाथ कृपा यह कीजिए, हो कर्मास्त्रव रोध।
सम्यक् पथ पर हम बढ़ें, जागे आतम बोध।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रवविरहित अर्हज्जिनेश्वराय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– नाथ आपके नाम का, करने से शुभ जाप।
'विशद' लोक में जीव के, कट जाते सब पाप।।

।। इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

पुण्यास्रव मण्डल विधान (अर्घ्यावली)

दोहा– सुगुण एक सौ आठ के, हैं ये अर्घ्य महान्।
पुष्पाञ्जलि के साथ हम, करते यहाँ प्रदान।।

।। मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

(शेर छंद)

अकृत मनः संरम्भ क्रोध, मन गुप्ति के धारी।
जिनराज क्रोध त्यागी हैं, श्रेष्ठ अविकारी।।
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ती से, शीश झुकाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अकृतमनःक्रोधसंरम्भमनोगुप्तये अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनने अकारित क्रोध को भी, पूर्ण नशाया।
आतम का ध्यान करके, शुभ मोक्ष पद पाया।।
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ती से, शीश झुकाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अकारितमनःक्रोधसंरम्भनिर्विकल्पधर्माय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुमोदना न क्रोध की, मन से कभी करें।
वे निर्विकल्प ध्यानी, शिव पंथ को वरें।।
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ती से, शीश झुकाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनःक्रोधसंरम्भसानंदधर्माय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनः जो क्रोध, समारम्भ कहाए।
कर्मों का नाश करके, आनन्द मनाए।।
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ती से, शीश झुकाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अकृतमनःक्रोधसमारम्भपरमानंदाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकारित मनः जो क्रोध, समारम्भ के धारी।
आनन्द सघन पाए, हो ब्रह्म बिहारी।।
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ती से, शीश झुकाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अकारितमनःक्रोधसमारम्भपरमानंदाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुमोदना न क्रोध, समारम्भ की करें।
आनन्द परम पावें, सब कष्ट जो हरें।।
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ती से, शीश झुकाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनःक्रोधसमारम्भपरमानंदसंतुष्टाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनः आरम्भ, क्रोध से विहीन हैं।
आनन्द के सरोवर जो, निज में लीन हैं।।
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ती से, शीश झुकाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अकृतमनःक्रोधारम्भस्वसंस्थानाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकारित मनः आरम्भ क्रोध, हीन बताए।
जिनराज बन्ध संस्थान, हीन कहलाए।।
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ती से, शीश झुकाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं अकारितमनःक्रोधारम्भबन्धसंस्थानाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुमोदना न क्रोध, आरम्भ की करें।
मन के विकार तज के, निज ज्ञान को वरें।।
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ती से, शीश झुकाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनःक्रोधारंभसंस्थानाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनः जो मान, संरम्भ हीन हैं।
निज का जो ध्यान करते, धर्म के अधीन हैं।।
हम सिद्ध शुद्ध जिन पद, में अर्घ्य चढ़ाएँ।
होके निमग्न भक्ती से, शीश झुकाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोमानसंरम्भसाधर्माय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द–भुजंग प्रयात)

अकारित मनोमान संरम्भ भाई, अनुपम अनन्य शरण सिद्धों ने पाई।
परम सिद्ध की शरण जीव जो पावें, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जावें।।11।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोमानसंरम्भअनन्यशरणाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित मान संरम्भ गाया, मन का सुगत भाव सिद्धों ने पाया।
परम सिद्ध की शरण जीव जो पावें, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जावें।।12।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानसंरम्भसुगुणभावाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनोमान समारम्भ जानो, सुख आत्म गुणधरी जिन सिद्ध मानो।
परम सिद्ध की शरण जीव जो पावें, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जावें।।13।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोमानसमारम्भसुखात्मगुणाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकारित मनोमान समारम्भ भाई, अनुपम अनन्य शरण सिद्धों ने पाई।
परम सिद्ध की शरण जीव जो पावें, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जावें।।14।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोमानसमारम्भअनन्यगताय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित मान समारम्भ धारी, मनोनन्त वीर्यधर सिद्ध अविकारी।
परम सिद्ध की शरण जीव जो पावें, कर्मों का नाशकर सिद्ध हो जावें।।15।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानसमारंभअनन्तवीर्याय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकारित मनोमानारम्भ भाई, अनन्त सुख सिद्धों की पहिचान गाई।।
परम सिद्ध की शरण जीव जो पावें, कर्मों का नाशकर शिव हो जावें।।16।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोमानारम्भअनन्तसुखाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनोमानारम्भ पाए, ज्ञानानन्त जिन सिद्ध स्वयं प्रगटाए।
परम सिद्ध की शरण जीव जो पावें, कर्मों का नाशकर शिव हो जावें।।17।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोमानारम्भअनन्तज्ञानाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित मनोमानारम्भी, गुणानन्त के सिद्ध प्रभु आलम्बी।
परम सिद्ध की शरण जीव जो पावें, कर्मों का नाशकर शिव हो जावें।।18।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमानआरम्भअनंतगुणाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनोमायासंरम्भ पाए, निज ब्रह्म स्वरूपी जिन सिद्ध गाए।
परम सिद्ध की शरण जीव जो पावें, कर्मों का नाशकर शिव हो जावें।।19।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोमायासंरम्भब्रह्मस्वरूपाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकारित मनोमाया संरम्भ जानो, चेतना में रमण नित्य करते हैं मानो।
परम सिद्ध की शरण जीव जो पावें, कर्मों का नाशकर शिव हो जावें।।20।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोमायासंरम्भचैतन्यभावाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित मनोमाया संरम्भी, अनन्य स्वभाव के सिद्ध अवलम्बी।
परम सिद्ध की शरण जीव जो पावें, कर्मों का नाशकर शिव हो जावें।।21।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमायासंरम्भअनन्यस्वभावाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनोमाया समारम्भ पाए, प्रभु स्वानुभूती रत जिन सिद्ध गाए।
परम सिद्ध की शरण जीव जो पावें, कर्मों का नाशकर शिव हो जावें।।22।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोमायासमारंभस्वानुभूतिरताय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकारित मनोमाया समारम्भधारी, प्रभु साम्य धर्म के बने हैं पुजारी।
परम सिद्ध की शरण जीव जो पावें, कर्मों का नाशकर शिव हो जावें।।23।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोमायासमारंभसाम्यधर्माय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित माया समारम्भी, सिद्ध प्रभू हैं स्वयं गुरु गुणालम्बी।
परम सिद्ध की शरण जीव जो पावें, कर्मों का नाशकर शिव हो जावें।।24।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमायासमारंभगुरवे अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनोमाया आरम्भ जानो, परम शांत गुण भोगी सिद्ध को मानो।
परम सिद्ध की शरण जीव जो पावें, कर्मों का नाशकर शिव हो जावें।।25।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोमायासमारम्भपरमशांताय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकारित मनोमाया आरम्भ योगी, निराकुल परम रस चैतन्य भोगी।
परम सिद्ध की शरण जीव जो पावें, कर्मों का नाशकर शिव हो जावें।।26।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोमायारंभनिराकुलाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्य छन्द)

नानुमोदित मनोमाया आरम्भधर, सुखानन्त पाने वाले अनुपम अजर।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।27।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोमायारंभअनन्तसुखाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मान लोभ संरम्भी जानिए, दृगानन्तधारी जिन को पहिचानिए।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।28।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभसंरम्भअनंतदृगात्मने अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनो अकारित लोभ संरम्भी जिन कहे, दृगानन्द अन्तर में जिनके नित बहे।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।29।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभसरंभदृगानंदभावाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित मनोलोभ संरम्भ धर, सिद्धभाव को पाने वाले हैं अमर।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।30।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभसंरंभसिद्धभावाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनोलोभ समारम्भ सिद्ध हैं, चिन्मय चित् स्वाभावी जगत प्रसिद्ध हैं।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।31।।

ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभसमारम्भचिद्देवाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकारित मान लोभ समारम्भी जानिए, निराकार जिन सिद्धों को पहिचानिए।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।32।।

ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभसमारंभनिराकाराय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित मनो लोभ समारम्भिया, रहे आप साकार यही निश्चय किया।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।33।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभसमारंभसाकाराय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत मनोलोभ आरम्भ जिन कहे, चिदानन्द चिद्रूपी अविनाशी रहे।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।34।।
ॐ ह्रीं अकृतमनोलोभारंभचिदानंदाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मनो अकारित लोभारंभी जिन प्रभू, चिदानन्द चिन्मय स्वरूपी हे विभू।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।35।।
ॐ ह्रीं अकारितमनोलोभारंभचिन्मयस्वरूपाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नानुमोदित मनोलोभ आरम्भ धर, निज स्वरूप में लीन रहे हैं सिद्धवर।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।36।।
ॐ ह्रीं नानुमोदितमनोलोभारंभस्वभावाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अकृत वचन क्रोध समरम्भी सिद्ध हैं, वागुप्ति के धारी जगत प्रसिद्ध हैं।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।37।।
ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधसंरभवागुप्ताय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वचनाकारित क्रोध संरम्भी जिन कहे, निज स्वरूप में लीन सिद्ध अनुपम रहे।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।38।।
ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधसंरंभस्वरूपाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नानुमोदित वचन क्रोध संरम्भया, प्राप्त स्वानुभव लब्धी का जिनने किया।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।39।।
ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधसंरंभस्वानुभवलब्धये अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अकृत वचन क्रोध समारम्भ धर, स्वानुभूति कर प्राणी होते हैं अमर।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।40।।
ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधसमारंभस्वानुभूतिरमणाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वचन अकारित क्रोध समारम्भी कहे, नर साधारण धर्म प्राप्त करते रहे।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।41।।
ॐ ह्रीं अकारितवचनक्रोधसमारंभसाधारणधर्माय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नानुमोदित वचन क्रोध समारम्भ धर, परम शांत शिव पाते हैं जिन सिद्धवर।
तव गुण की पूजा करने हम आए हैं, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।42।।
ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधसमारम्भपरमशांताय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

वैर कटुक वचनों से होवे, आरंभाकृत शांती खोवे।
क्षमा धर्म परमामृत धारी, तुष्टी पाते हैं अविकारी।।43।।
ॐ ह्रीं अकृतवचनक्रोधारंभपरमामृततुष्टाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वचनाकारित धारी प्राणी, क्रोधारम्भ रहित हो वाणी।
क्षमा धर्म समरसता धारी, शिव सुख पाते हैं अविकारी।।44।।
ॐ ह्रीं अकारितवचतक्रोधारंभसमरसाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नानुमोदित वचन सुनाएँ, क्रोधारम्भ नहीं जो पाएँ।
परम प्रीति धारी मनहारी, शिव सुख पाते हैं अविकारी।।45।।
ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनक्रोधारंभपरमप्रीतये अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अकृत वचन मान संरम्भी, हीन परिग्रह या आरम्भी।
परम धर्म अविनश्वर धारी, शिव सुख पाते हैं अविकारी।।46।।
ॐ ह्रीं अकृतवचनमानसंरम्भअविनश्वरधर्माय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वचन मान संरम्भी जानो, स्वयं अकारित ही पहिचानो।
परमा धर्म अव्यक्त स्वरूपी, जिन अचिन्त्य अव्यय चिद्रूपी।।47।।
ॐ ह्रीं अकारितवचनमानसंरम्भअव्यक्तस्वरूपाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वचन मान संमरम्भ नशाए, नानुमोदित जिन कहलाए।
दुर्लभ मार्दव धर्म स्वरूपी, जिन अचिन्त्य अक्षय चिद्रूपी।।48।।
ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानसंरम्भदुर्लभाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अकृत वचन मान के त्यागी, समारम्भ के न अनुरागी।
परम गम्य अविकारी गाए, प्राणी सिद्ध सुपद को पाए।।49।।
ॐ ह्रीं अकृतवचनमानसमारंभपरमगम्यनिराकाराय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वचनाकारित मान नशाए, समारम्भ से रहित कहाए।
परम स्वभाव आपने पाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया।।50।।
ॐ ह्रीं अकारितवचनमानसमारंभपरमस्वभावाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नानुमोदित वचन बताए, समारम्भ गत मान नशाए।
जो एकत्व सुगत कहलाए, अनुपम सिद्ध सुपद को पाए।।51।।
ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानसमारंभएकत्वसुगताय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत वचन मान आरम्भी, वचन कभी न कहते दम्भी।
धर्म राज स्वभावी गाए, परमातम पद जिन प्रभु पाए।।52।।

ॐ ह्रीं अकृतवचनमानारंभपरमात्मधर्मराज धर्मस्वभावाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकारित मान विनाशी, हैं आरम्भ रहित अविनाशी।
जो शास्वत आनन्द जगाए, सिद्ध शिला पर धाम बनाए।।53।।

ॐ ह्रीं अकारितवचनमानारम्भशास्वतानन्दाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित वचन निराले, मानारम्भ रहित गुण वाले।
अमृत पूरण आप कहाए, अनुपम निजानन्द सुख पाए।।54।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमानारंभअमृतपूरणाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत वचन माया संरम्भी, रहित परिग्रह औ आरम्भी।
धर्मेकरूपा आप कहाए, गुण अनन्त तुमने प्रगटाए।।55।।

ॐ ह्रीं अकृतवचनमायासंरम्भअनन्तधर्मैकरूपाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकारित माया धारी, हैं समरम्भ रहित अविकारी।
अमृत चन्द्र कहे हैं स्वामी, मोक्ष पंथ के हैं अनुगामी।।56।।

ॐ ह्रीं अकारितवचनमायासंरंभअमृतचन्द्राय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित वचन सुनाए, जो माया संरम्भी गाए।
अनेक मूर्ति कहलाए स्वामी, तीन काल के अन्तर्यामी।।57।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायासंरम्भअनेकमूर्तये अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकृत माया के धारी, कहे समारम्भी अविकारी।
नित्य निरंजन शांत स्वभावी, पूर्ण ज्ञान धारी अनगारी।।58।।

ॐ ह्रीं अकृतवचनमायासमारंभनित्यनिरंजनस्वभावाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल – टप्पा)

वचनाकारित माया समारम्भ, कहे गये भाई।
आत्मिक धर्म प्राप्त कीन्हें हैं, जिनवर सुखदायी।।
सिद्ध जिन पूजो हो भाई।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी।।59।।

ॐ ह्रीं अकारितवचनमायासमारंभआत्मैकधर्माय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सूक्ष्म जिन सिद्ध श्री की, महिमा शुभ गाई।
नानुमोदित वचन माया, समारंभ सहित भाई।।
सिद्ध जिन पूजो हो भाई।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी।।60।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायासमारम्भपरमसूक्ष्माय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत वचन माया आरम्भी, सिद्ध कहे भाई।
अनन्तावकाश रूप सिद्धों की, फैली प्रभुताई।।
सिद्ध जिन पूजो हो भाई।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी।।61।।

ॐ ह्रीं अकृतमायारम्भअनन्तावकाशाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकारित माया आरम्भी, जिनवर सुखदायी।
अमल गुणों के कोष प्रभु की, महिमा दिखलाई।।
सिद्ध जिन पूजो हो भाई।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी।।62।।

ॐ ह्रीं अकारितवचनमायारंभअमलगुणाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित वचन माया, आरम्भ युक्त भाई।
निज में निज से लीन हुए सुख, निराबाध पाई।।
सिद्ध जिन पूजो हो भाई।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी।।63।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनमायारम्भनिरवधिसुखाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत वचन लोभ संरम्भी, व्यापक धर्म पाई।
सरल गती संतोषी अनुपम, होती सुख दायी।।
सिद्ध जिन पूजो हो भाई।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी।।64।।

ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभसंरम्भव्यापकधर्माय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकारित लोभ संरम्भी, व्यापक गुण भाई।
पाने वालों की इस जग में, फैली प्रभुताई।।
सिद्ध जिन पूजो हो भाई।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी।।65।।

ॐ ह्रीं अकारितवचनलोभसंरंभव्यापकगुणाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित वचन लोभ, संरम्भ युक्त भाई।
अचल धर्मधारी कहलाए, भविजन सुखदायी।।
सिद्ध जिन पूजो हो भाई।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलदायी।।66।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनलोभसंरंभअचलाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत वचन लोभ समारम्भी, निरावलम्ब धारी।
चिदानंद चैतन्य स्वरूपी, जग में शुभकारी।।
सिद्ध जिन पूजो शुभकारी।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी।।67।।

ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभसमारंभनिरालंबाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकारित लोभ समारम्भ, संयुत अनगारी।
सिद्धशिला पर सिद्ध निराश्रय, गाये शुभकारी।।
सिद्ध जिन पूजो शुभकारी।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी।।68।।।

ॐ ह्रीं अकारितवचनलोभसमारंभनिराश्रयाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित वचन लोभ युत्, समारम्भ धारी।
अक्षय सिद्ध अखण्ड अरूपी, पावन मनहारी।।
सिद्ध जिन पूजो शुभकारी।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी।।69।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनलोभसमारंभअखण्डाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत वचन लोभ आरम्भी, जिन मंगलकारी।
परीत अवस्था धारी अनुपम, जन-जन मनहारी।।
सिद्ध जिन पूजो शुभकारी।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी।।70।।

ॐ ह्रीं अकृतवचनलोभारंभपरितावस्थाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनाकारित लोभारम्भी, श्री जिन गुणधारी।
समयसार के सार रूप हैं, पावन अनगारी।।
सिद्ध जिन पूजो शुभकारी।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी।।71।।

ॐ ह्रीं अकारितवचनलोभारम्भसमयसाराय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित वचनारम्भी, लोभ कषाय धारी।
नित्य निरन्तर, सुखानन्तमय, दर्श ज्ञान कारी।।
सिद्ध जिन पूजो शुभकारी।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी।।72।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितवचनलोभारम्भनिरंतराय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत क्रोध काय समरम्भी, काय गुप्तिधारी।
अजर अमर पद पाने वाले, भविजन हितकारी।।
सिद्ध जिन पूजो शुभकारी।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी।।73।।

ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधसरंभकायगुप्तये अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय क्रोध संरम्भाकारित, अतिशय शुभकारी।
ज्ञान शरीरी कर्मरहित जिन, शुद्ध काय धारी।।
सिद्ध जिन पूजो शुभकारी।
सर्व जहाँ में सिद्ध प्रभु हैं, जग मंगलकारी।।74।।

ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधसरंभशुद्धकायाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अर्घ्य–जोगीरासा)

नानुमोदित काय क्रोध युत, संरम्भ काय धर पाए।
सिद्ध श्री लोकाग्र निवासी, के गुण हमने गाए।।75।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायक्रोधसमरंभअकायाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत काय क्रोध समारम्भी, स्वान्वयगुण के धारी।
स्वाभाविक गुण प्राप्त सिद्ध की, महिमा है न्यारी।।76।।

ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधसमारंभस्वान्वयगुणाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय क्रोध समारम्भाकारित, है अनुपम गुण वाले।
विशद भावरत सिद्ध श्री जिन, जग में रहे निराले।।77।।

ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधसमारम्भभावरतये अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित काय क्रोध युत, समारम्भ के धारी।
सिद्ध स्वान्वय धर्म स्वभावी, अनुपम है गुण धारी।।78।।

ॐ ह्रीं नानुमोदिकायक्रोधसमारंभसान्वयधर्माय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत काय क्रोधारम्भी, शुद्ध द्रव्य रत जानो।
सिद्ध आठ गुण धारी पावन, शुद्ध स्वरूपी मानो।।79।।

ॐ ह्रीं अकृतकायक्रोधारंभशुद्धद्रव्यरताय अर्हत् परमेष्ठिने निर्वपामीति स्वाहा।

कायाकारित क्रोधारम्भी, सिद्ध प्रभु जी गाए।
जो संसारच्छेदक जानो, सबके मन को भाए।।80।।

ॐ ह्रीं अकारितकायक्रोधारंभसंसारच्छेदकाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायारम्भ क्रोधानुमोदन में न, हर्ष विषाद धारें।
जैन धर्म अनुसार क्रिया कर, सर्व दोष परिहारें।।81।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायक्रोधारंभजैनधर्माय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान सहित संरम्भ कायकृत, तन से रचना त्यागें।
स्वस्वरूप के गोपन में ही, नित्य प्रति जो लागें।।82।।

ॐ ह्रीं अकृतकायमानसंरंभस्वरूपगुप्तये अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानोदय संरम्भ विधी जो, नहीं देह से करते।
निज कृत कर्म करें नित ज्ञानी, सब विकार जो हरते।।83।।

ॐ ह्रीं अकारितकायमानसंरंभनिजकृतये अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान सहित संरम्भ काय में, नहीं देह से धारें।
ध्यान योग से ध्येय भाव धर, निज के गुण में लागें।।84।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानसंरम्भध्येयभावाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से मान युक्त होकर न, समारम्भ को पावें।
परमाराधन करने वाले, शुद्ध भावना भावें।।85।।

ॐ ह्रीं अकृतकायमानसमारंभपरमाराधनाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से मद युत समारम्भ न, कभी धारने वाले।
ज्ञानानन्द गुणी मतवाले, जग से रहे निराले।।86।।

ॐ ह्रीं अकारितकायमानसमारम्भआनंदगुणाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से समारम्भ की विधि में, हर्ष मान परिहारें।
स्वानन्दानन्दित हो करके, संयम रत्न सम्हारें।।87।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानसमारम्भस्वानंदनंदिताय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत काय मान आरम्भी, अनुपम हैं शुभकारी।
निजानन्द संतोषी प्राणी, जग में मंगलकारी।।88।।

ॐ ह्रीं अकृतकायमानारम्भसंतोषाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायारम्भ अकारित मानी, स्वस्वरूप रत गाये।
उनके गुण से प्रीत धार नर, तन मन से हर्षाए।।89।।

ॐ ह्रीं अकारितकायमानारम्भस्वरूपरताय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानारम्भ अनंदित देही, विमल शुद्ध पर्यायी।
नानुमोदित मानारम्भी कहे, सिद्ध जिन भाई।।90।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमानारम्भशुद्धपर्यायाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत काय माया संरम्भी, अमृत गर्भ के धारी।
तन मन से जो शुद्ध कहाए, संत सहज शुभकारी।।91।।

ॐ ह्रीं अकृतकायमायासंरम्भअमृतगर्भाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया युत संरम्भ देह से, कभी न करने वाले।
मुख्य धर्म चैतन्य स्वरूपी, जग में रहे निराले।।92।।

ॐ ह्रीं अकारितकायमायासंरम्भचैतन्याय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया युत संरम्भ देह से, नानुमोदित धारी।
वीतराग समरसी भाव मय, अनुपम हैं अविकारी।।93।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायासंरम्भसमरसीभावाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारम्भ माया के धारी, अकृत तन विच्छेदी।
भवछेदक निज पर के हैं जो, तन चेतन के भेदी।।94।।

ॐ ह्रीं अकृतकायमायासमारम्भभवछेदकाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समारम्भ तन की कुटिलाई, भये अकारित स्वामी।
नानुमोदित स्वतंत्र धर्म युत, सिद्ध कहे शिवगामी।।95।।

ॐ ह्रीं अकारितकायमायासमारंभस्वातंत्र्धर्माय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माया युत निज देह के द्वारा, करते न आरम्भ कभी।
नानुमोदित गुण के धारी, धर्मसमूही सिद्ध सभी।।96।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायासमारम्भधर्मसमूहाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

निज देहाकृत माया प्रधान, आरम्भ रहित गुण के निधान।
परमातम सुख में रहें लीन, इन्द्रिय आदिक से हैं विहीन।।97।।

ॐ ह्रीं अकृत कायमायारम्भ परमात्मसुखाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरम्भ काय माया विहीन, हैं सिद्ध अकारित सर्वहीन।
निष्ठातम स्वस्थित हैं जिनेश, चरणों में वन्दन है विशेष।।98।।

ॐ ह्रीं अकारितकायमाराम्भनिष्ठात्मने अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित माया विहीन, आरम्भ काय चैतन्य लीन।
जिनवर की महिमा है महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान।।99।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायमायारम्भचेतनाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्रम्भ लोभ नहि काय वान, चित् परिणति युत गुण के निधान।
जिनवर की महिमा है महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान।।100।।

ॐ ह्रीं अकृतकायलोभसंरम्भपरमचित्परिणताय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संरम्भाकारित देह लोभ, स्व समय लीन हैं रहित क्षोभ।
जिनवर की महिमा है महान, है सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान।।101।।

ॐ ह्रीं अकारितकायलोभसंरम्भस्वसमयरताय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संरम्भ लोभ तन हर्ष हीन, जिन व्यक्त धर्म स्वसमय लीन।
जिनवर की महिमा है महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान।।102।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभसंरम्भव्यक्तधर्माय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन लोभाकृत तन समारम्भ, प्रभु सिद्ध रहित हैं पूर्ण दम्भ।
हैं नित्य सुखी जिनवर महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान।।103।।

ॐ ह्रीं अकृतकायलोभसमारम्भनित्यसुखाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज लोभाकारित काय वान, जिन समारम्भ की किए हान।
जो रहित पूर्णतः हैं कषाय, कहलाते जिनवर अकषाय।।104।।

ॐ ह्रीं अकारितकायलोभसमारम्भअकषाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं समारम्भ तन लोभ हीन, अनुमोदन से जो हैं विहीन।
शुभ शौच गुणी जिनवर महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान।।105।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभसमारम्भशौचगुणाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभाकृत कायारम्भवान, जो चिद् आतम का करें भान।
जिनवर की महिमा है महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान।।106।।

ॐ ह्रीं अकारितकायलोभारम्भचिदात्मने अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो लोभाकारित कायारम्भ, जिन आधर विराजे निरालम्ब।
जिनवर की महिमा है महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान।।107।।

ॐ ह्रीं अकारितकायलोभारम्भनिरालम्बाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानुमोदित तन लोभारम्भ, निज आत्म निरत हैं हीन दम्भ।
जिनवर की महिमा है महान, हैं सिद्ध श्रेष्ठ गुण के निधान।।108।।

ॐ ह्रीं नानुमोदितकायलोभारंभआत्मरतसिद्धाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्रंभादिक योग कषायों, से होता आस्त्रव भारी।
दर्शन ज्ञान चारित के धारी, पुण्यास्त्रव के अधिकारी।।
भव्य जीव पुण्यास्त्रव करके, मोक्ष महापद पाते हैं।
हम भी मुक्ती पद को पाएँ, विशद भावना भाते हैं।।109।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रव विरहित अर्हंज्जिनेश्वराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य- (1) ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः। अथवा
(2) ॐ ह्रीं कर्मास्त्रवरहितानन्त केवलिभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा- पुण्यास्त्रव कर जीव यह, पावे शिव सोपान।
जयमाला गाते यहाँ, पाने पद निर्वाण।।

(शम्भू छन्द)

हे शुद्ध सनातन अविकारी, हे नित्य निरंजन मोक्ष धाम।
हे महाधैर्य ! हे अविनाशी !, तव चरणों में शत्-शत् प्रणाम।।
हे मोहजयी ! हे कर्मजयी !, तुमने कषाय पर जय पाई।
मोहित करने को मोह कर्म, ने अपनी शक्ती अजमाई।।1।।

उदयागत कर्मों ने अपना, शक्तिशः जोर लगाया था।
पर नाथ आपकी समता के, आगे न जोर चल पाया था।।
कभी क्रोध ने जोर लगाया था, कभी मान उदय में आया था।
माया कषाय अरु लोभोदय, का भी न जोर चल पाया था।।2।।

मिथ्यात्व ने मति मिथ्या करने, हेतू भी जोर लगाया था।
क्षायिक सम्यक्त्व के आगे वह, क्षणभर भी न रह पाया था।।
ज्ञानावरणी जो कर्म रहा, आवरण ज्ञान पर डाल रहा।
अज्ञान महातम के कारण, जग में रहकर बहु कष्ट सहा।।3।।

कर्म दर्शनावरण उदय में, आ दर्शन गुण घात करे।
अन्तराय विघ्नों की भाई, जीवन में बरसात करे।।
वेदनीय सुख-दुख का वेदन, करने में सहयोग करे।
राग-द्वेष निर्मित कर अपने, चेतन गुण को पूर्ण हरे।।4।।

गतियों में भटकाने वाला, आयू कर्म निराला है।
तीन लोक में जन्म-जरादिक, के दुख देने वाला है।।

नाम कर्म तन की रचना कर, नाना रूप बनाता है।
कर्म और नो कर्म वर्गणा, पर अधिकार जमाता है।।5।।

उच्च नीच कुल में ले जाने, वाला गोत्र कर्म गाया।
नाथ आपके आगे कर्मों, की न चल पाई माया।।
चिन्मूरत आप अनन्त गुणी, तुममें आनन्द समाया है।
सब ऋद्धि सिद्धियों ने झुककर, आश्रय तव पद में पाया है।।6।।

सूरज को देख गगन में ज्यों, कई फूल जमीं पर खिल जाते।
अपनी सुगन्ध सौरभ द्वारा, जन-जन के मन को महकाते।।
हे प्रभू आपका दर्श 'विशद', जग जन में प्रेम जगाता है।
शुभ ध्यान आपका भव्यों को, सीधा शिवपुर पहुँचाता है।।7।।

दोहा- श्री जिनेन्द्र की अर्चना, करते जो धर ध्यान।
अल्प समय में जीव वह, पाते पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं सर्वास्त्रव विरहित अर्हंज्जिनेश्वराय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चित् चिन्मय चेतन प्रभू !, चिदानन्द चिद्रूप।
तव चरणों का ध्यान कर, पाएँ निज स्वरूप।।

इत्याशीर्वादः

प्रशस्ति

स्वस्ति श्री वीर निर्वाण सम्वत् 2540 विक्रम सम्वत् 2070 मासोत्तममासे शुभ मासे चैत्र कृष्ण पञ्चमी, शुक्रवासरे रेवाड़ी नामनगरे जैनपुरी स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनालय मध्ये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सेनगच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्या जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्या जातास्तत् शिष्य श्री विमलसागराचार्या जातास्तत् शिष्यः श्री भरतसागराचार्या श्री विरागसागराचार्या जातास्तत् शिष्यः विशदसागराचार्येण श्री पुण्यास्त्रव विधान लिख्यते इति शुभं भूयात्।

पंच परमेष्ठी की आरती

(तर्ज–पत्थर के पारस प्यारे...)

परमेष्ठी हैं पंच हमारे, सारे जग से न्यारे।
सबकी उतारे हम आरती, ओ भैया !
हम सब उतारें मंगल आरती....
कर्म घातिया नाश किये हैं, केवल ज्ञान जगाए।
दोष अठारह रहे न कोई, प्रभु अर्हत् कहलाए।।
प्रभु के द्वारे हम आये, भक्ति से शीश झुकाए।।
हम सब उतारें मंगल आरती....
अष्ट कर्म का नाश किया है, अष्ट गुणों को पाए।
अजर–अमर अक्षय पद धारी, सिद्ध प्रभु कहलाए।।
शिवपुर को जाने वाले, मुक्ति को पाने वाले।
हम सब उतारें मंगल आरती....
पंचाचार का पालन करते, शिष्यों से करवाते।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य कहलाते।।
भक्ति हम उनकी करते, चरणों में मस्तक धरते।।
हम सब उतारें मंगल आरती....
रत्नत्रय के धारी मुनिवर, पढ़ते और पढ़ाते।
मोक्ष मार्ग पर उपाध्यायजी, नित प्रति कदम बढ़ाते।।
मूल गुण पाने वाले, ज्ञान बरसाने वाले।
हम सब उतारें मंगल आरती....
विषय वासना हीन रहे जो, ज्ञान ध्यान तप करते।
'विशद' साधना करने वाले, कर्म कालिमा हरते।।
कर्मों को हरने वाले, मुक्ति को वरने वाले।
हम सब उतारें मंगल आरती....

प.पू. 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

(स्थापना)

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैंङ्क
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व.स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्व.स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार–बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 18 विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व.स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व.स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्व.स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वच-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कणङ्क
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थीङ्क
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़ेङ्क
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाङ्क
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बसंत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरतेङ्क
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती हैङ्क
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंङ्क

ॐ ह्रूँ प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

वर्तमान के सर्वाधिक विधान रचयिता प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित 120 विधानों की विशाल श्रृंखला

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभु महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेदशिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सवदोष प्रायश्चित्त विधान
36. लघु पंचमेरु विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चँवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पत्ति विधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषिमण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद् ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्त्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद् नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
58. श्री दशलक्षण धर्म विधान
59. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
60. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
61. अभिनव वृहद् कल्पतरु विधान
62. वृहद् श्री समवशरण महामण्डल विधान
63. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
64. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
65. कालसर्पयोग निवारक महामण्डल विधान
66. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
67. श्री सम्मेदशिखर कूटपूजन विधान
68. त्रिविधान संग्रह-1
69. पंचविधान संग्रह
70. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
71. लघु धर्मचक्र विधान
72. अर्हत् महिमा विधान
73. सरस्वती विधान
74. विशद महाअर्चना विधान
75. विधान संग्रह (प्रथम)
76. विधान संग्रह (द्वितीय)
77. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गाँव)
78. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
79. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
80. अर्हत् नाम विधान।
81. सम्यक् आराधना विधान
82. लघु नवदेवता विधान
83. लघु मृत्युञ्जय विधान
84. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
85. मृत्युञ्जय विधान
86. लघु जम्बूद्वीप विधान
87. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
88. क्षायिक नवलब्धि विधान
89. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
90. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
91. वृहद् निर्वाण क्षेत्र विधान
92. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
93. तीन लोक विधान
94. कल्पद्रुम विधान
95. श्री सम्मेद शिखर चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
96. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान (लघु)
97. सहस्त्रनाम विधान (लघु)
98. तत्त्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
99. त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
100. पुण्यास्त्रव विधान
101. सप्त ऋषि विधान
102. तेरह द्वीप मण्डल विधान
103. श्री शान्ति-कुन्थु-अरहनाथ मण्डल विधान
104. श्रावक व्रत दोष प्रायश्चित्त विधान
105. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
106. सम्यक् दर्शन विधान
107. श्रुतज्ञान व्रत विधान
108. ज्ञान पच्चीसी विधान
109. चारित्र शुद्धि विधान
110. लघु शांति विधान
111. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
112. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
113. विजय श्री विधान
114. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
115. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
116. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
117. षट् खण्डागम विधान
118. दिव्य देशना विधान
119. श्री आदिनाथ विधान (रेवाड़ी)
120. नवग्रह शांति विधान
121. विशद पञ्चागम संग्रह
122. जिन गुरु भक्ति संग्रह
123. धर्म की दस लहरें
124. स्तुति स्तोत्र संग्रह
125. विराग वंदन
126. बिन खिले मुरझा गए
127. जिन्दगी क्या है
128. धर्म प्रवाह
129. भक्ति के फूल
130. विशद श्रमण चर्या
131. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
132. इष्टोपदेश चौपाई
133. द्रव्य संग्रह चौपाई
134. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
135. समाधितन्त्र चौपाई
136. सुभाषित रत्नावलि चौपाई
137. संस्कार विज्ञान
138. बाल विज्ञान भाग-3
139. नैतिक शिक्षा भाग-1,2,3
140. विशद स्तोत्र संग्रह
141. भगवती आराधना
142. चिंतवन सरोवर भाग-1
143. चिंतवन सरोवर भाग-2
144. जीवन की मन:स्थितियाँ
145. आराध्य अर्चना
146. आराधना के सुमन
147. मूक उपदेश भाग-1
148. मूक उपदेश भाग-2
149. विशद प्रवचन पर्व
150. विशद ज्ञान ज्योति
151. जरा सोचो तो
152. विशद भक्ति पीयूष
153. विशद मुक्तावली
154. संगीत प्रसून
155. आरती चालीसा संग्रह
156. भक्तामर भावना
157. बड़ा गाँव आरती चालीसा संग्रह
158. सहस्त्रकूट जिनार्चना संग्रह
159. विशद महा अर्चना संग्रह
160. विशद जिनवाणी संग्रह
161. विशद वीतरागी संत
162. काव्य पुञ्ज
163. पञ्च जाप्य
164. श्री चँवलेश्वर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह
165. बिजोलिया तीथपूजन आरती चालीसा संग्रह
166. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

नोट-उपरोक्त विधानों में से आप अधिकाधिक पूजन विधान कर अथाह पुण्य का अर्जन करें। - मुनि विशालसागर